Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2411IV05V12P0006

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue On CPDE Nov'2024
Issue–III(V), Volume–XII

मलयज की डायरी और उनका हंसता हुआ अकेलापन

मनोज शर्मा
पी एच डी शोधार्थी हिंदी
दिल्ली विश्वविद्यालय
सम्पर्क : 9868310402
ईमेल : mannufeb22@gmail.com

सारांश
हिंदी साहित्य के आधुनिक काल नयी विधाओं का प्रसव काल रहा है. डायरी हिंदी साहित्य की नवीन विधा है. डायरी को दैनिकी और दैनन्दिनी भी कहा जाता है जिसमें रोज़ की बाते लिखी है. मलयज हिंदी के अग्रज लेखक हैं जिन्होंने अनेक साहित्यिक विधाओं में अपनी रूचि दिखाई. हँसते हुए मेरा अकेलापन उनकी लिखी डायरी है. नामवर सिंह ने इसका सम्पादन किया है. इसका प्रकाशन वाणी प्रकाशन ने सन 2000 में किया है. इस डायरी में मलयज के करीब 32 सालों का लेखन है.डायरी एक मित्र की भांति होती है जिसमें लेखक स्वयं की निजी बातों का अंकन करता है.आधुनिक काल में बहुत–सी डायरियां लिखी गई.जैसे **मेरी कालिज डायरी** (धीरेन्द्र वर्मा),**प्रवास की डायरी**(हरिवंश राय बच्चन), **दिनकर की डायरी**(दिनकर) **मोहन राकेश की डायरी**(मोहन राकेश)आदि .**हँसते हुए मेरा अकेलापन** मलयज की डायरी है जो तीन खंडों में प्रकाशित है.इस डायरी के माध्यम से मलयज के समग्र व्यक्तित्व को आसानी से समझा जा सकता है. मलयज की डायरी डायरी साहित्य में हिन् नहीं बल्कि सम्पूर्ण हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती है.
बीज शब्द : डायरी, साहित्य, आधुनिक काल, नयी विधा,अकेलापन

शोध आलेख
डायरी आज साहित्य की समृद्ध विधा है. डायरी विधा की गणना साहित्य की अन्य गद्य विधाओं में की जाती है.पाश्चात्य विधा होते हुए भी 'डायरी' विधा स्वतंत्र और मौलिक रूप में हिंदी में विकसित हुई.(1) इस विधा का सूत्रपात काफी धीमी गति से हुआ किन्तु स्वतंत्रता के उपरान्त इस विधा के लेखन में तेज़ी आयी. '**मेरी कालिज डायरी**' धीरेन्द्र वर्मा द्वारा लिखी गई पहली डायरी है जिसमे डायरी के सम्पूर्ण तत्वों का निर्वाह हुआ है. गांधी जी ने भी डायरी लिखी थी. उर्दू में इसे रोजनामचा कहा जाता है. मलयज की डायरी दूसरी डायरियों से नितांत भिन्न है. इसमें उनके लगभग 32 साल सिमटे हैं.एक-एक दिन का लेखा जोखा व् क्रिया कलाप है. जिन्हें सुविख्यात आलोचक नामवर सिंह ने सम्पादित किया है. मलयज की डायरी में उनका समग्र लेखन ही नहीं बल्कि आत्मा की आवाज़ भी सुनाई देती है. इसके तीन भागों में करीब 1400 पन्ने हैं जिसे नामवर सिंह ने तीन भागों में प्रकशित करवाया है. मलयज की डायरी में उनका समग्र लेखन है. इसमें गद्य के साथ- साथ उनके गीत-कविता आदि भी अंकन है. डायरी में लेखक स्वयं से बाते करता है. ये एक मित्र की भांति होती है जिसमे उसकी

अपनी निजी बातों का उल्लेख होता है. डायरी में दिन भर की बाते और लेखक के विभिन्न मूड्स का चित्रण होता है. इसमें लेखक के दुःख-सुख और उसके जीवन में आये उतार चढ़ावों को परत दर परत समझा जा सकता है. संक्षिप्त में लेखक की डायरी के माध्यम से उसके व्यक्तित्व को आसानी से जाना जा सकता है. क्या नहीं है इस डायरी में ? सबकुछ तो है.एक-एक साँस का ब्योरा इस डायरी में दिखाई देता है.

मलयज की डायरी तीन खंडों में प्रकाशित है.डायरी का प्रथम खंड 1951 से 1960 के बीच लिखी गई डायरी का है. दूसरा खंड 1961 से 1970 तक और तीसरा खंड 1971 से 1981 तक का है.(2)

मलयज का मानना है

"गरीब स्वभावत: क्रान्तिकारी होता है क्योंकि भूखे पेट और एक लंगोटी के सिवा उसके पास कुछ नहीं होता. जो गरीब के साथ नहीं है, वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर अमीर के साथ है. अमीर बनने की चेष्टा गरीब के बृहत समूह से कटते जाने की चेष्टा है. अपने को बंद करने की चेष्टा है. एक व्यक्ति भी अपने निर्णय से - अपने अमीर बनने के निर्णय से - कई कई गरीब पैदा करता है. अमीर बनने की कोशिश जन-समूह का रास्ता छोड़कर अपनी अलग पगडंडी पर चलने लगना है. सबका, बहुसंख्यक का साथ छोड़ देना, देश का साथ छोड़ देना है क्योंकि देश उन लोगों से बना है, जो ज्यादातर गरीब हैं, गरीबी की रेखा के नीचे जी रहे हैं. आज अमीर होना एक अराष्ट्रीय कर्म है. कविता मेरे लिए एक आत्मसाक्षात्कार है और आलोचना उसी कविता से साक्षात्कार."(3)

मलयज ने जो कुछ भी महसूस किया उसे अपनी डायरी में स्थान दिया.आदमी के तौर पर उनके होठो पर सदा चुप्पी रही किन्तु साहित्यकार की दृष्टि से वो सदैव कुछ न कुछ लिखते रहे इसीलिए उनकी डायरी में उनकी निजी बाते ही नहीं बल्कि साहित्य की अनेक विधाओं के दर्शन किये जा सकते है. मलयज की डायरी साहित्य की बेशकीमती धरोहर है जिसे उन्हें काफी लगाव के साथ लिखा है.

डायरी साहित्य की प्रमुख विधा है ,जिसमे लेखक आत्म साक्षात्कार करता है(4) "हँसते हुए मेरा अकेलापन" मलयज की डायरी है. जो उनके जीते जी प्रकाशित नहीं हो सकी.इस डायरी में उनकी बत्तीस सालों की तपस्या है. उनकी मुस्कराहट है रूदन है और छटपटाहट है जिसे उन्होंने हर क्षण अनुभव किया था.उन्होंने साहित्य को नयी शैली और नयी भाषा दी.मलयज अन्तर्मुखी थे.वो एक मध्यवर्गीय साहित्यकार थे इसीलिए उन्होंने मध्य वर्ग के लोगो से जुडी विभिन्न समस्याओं को अपने साहित्य में चित्रित किया है.धन का अभाव और व्याधिग्रस्त देह उनके प्रगति पथ में सदा वाधक रही. लेखक की दुखद स्थितियों ने मलयज को घोर निराशा और वेदना प्रदान की शायद यही कारण रहा की उनकी डायरी में जीवन से जुड़े भयावह दृश्य अंकित हैं जिनमें उन्होंने अपनी ऐसी दारुण अवस्था का यथावत अंकन है.

एक खुलापन, जिसको सब घूर सकें
एक नंगापन जिसमें देख सकें सब
अपने दुखी क्रुद्ध विकृत चेहरे

खंडहर, जिसकी दरारें सब कोई
पढ़ सके सम्बन्ध कोई स्थापित कर सके
जो कहीं न छपा, न बिका हो
लिखो वह सम्बन्ध, जो संकट से बचा हो
वह सिली-सिलाई किताब नहीं
जो बैठी है शब्दों के भीतर मैल-सी
संकट में होना धार में होना है
किनारा है उथलापन
जहाँ मिलेगी तुम्हें अकेली सूखी चमक(4)

मलयज की डायरी में वो सब कुछ है जिसे उन्हें पल-पल अनुभूत किया. उनकी डायरी में उनका हृदय और उनके हृदय का स्पन्दन दिखाई देता है. विजयदेव नारायण साही और शमशेर बहादुर सिंह उनके बेहद करीब रहे जिसका ज़िक्र काफी स्थानों पर दिखाई देता है. मलयज स्वछन्द प्रवृति के रचनाकार थे वो जैसा सोचते थे वैसा ही कहते थे और जैसा ही कहते थे वैसा ही लिखते थे.उनके लेखन में कहीं भी दुहराव की स्थिति नहीं है. वो रोजाना कुछ ना कुछ लिखते थे हालंकि डायरी को भी वो सुरक्षित स्थान नहीं मानते थे पर कोई तो ऐसा मित्र हो जिसे वो अपनी बातें कह सकें.इसीलिए उन्होंने डायरी के एक पन्ने में लिखा है.

मलयज का जीवन काफी अभावग्रस्त एवं संघर्षमयी रहा.वो बहुत बड़े रचनाकार थे किन्तु उन्होंने ताउम्र साधारण जीवन जीया. वो आजीवन कठिनाइयों से जूझते रहे. नौ वर्ष में ही क्षय रोगग्रस्त, इलाहाबाद से स्नातक अध्ययन के दौरान गंभीर बीमार, इलाज के लिए वेल्लूर ले जाए गए, जहां उनका एक फेफड़ा काटकर निकाल दिया गया. कृशकाय हो गए. अवसाद ने घेर लिया लेकिन अदम्य जीजीविषा बनी रही. जीवन को ललक के साथ जीने की उम्मीद ने उन्हें हमेशा बांधे रखा. अंग्रेजी से एम.ए. करने के बाद वह इलाहाबाद छोड़ आजीविका की खोज में दिल्ली गए, वहां प्रभाकर माचवे की मदद से कृषि मंत्रालय की अंग्रेजी पत्रिका में नौकरी करते हुए साहित्य के सृजन में चुपचाप संलग्न रहे. दिल्ली में रहते हुए भी दिल्ली के मिजाज से दूर शमशेर के निकट रहे.

वो साहित्य के सच्चे साधक रहे. उन्होंने आलोचना के नये प्रतिमान स्थापित किये वो अपनी कविता के स्वयं आलोचक रहे हैं. उनका कहना था

लिखो तभी जब संकट में हो
चीजें जब सब हिली हुई हो
जमीन सरकी हुई थिर कुछ भी नहीं
एक साँस भीतर एक बाहर बीच में
हलचल जिसमें कोई तरतीब नहीं (5)

उनकी डायरी पढ़ते समय उनका प्रतिबिम्ब नज़र आता है. डायरी एक निजी चीज़ है जिसमे हम स्वयं के अनुभव सहेजते हैं किन्तु मलयज डायरी को भी ज्यादा सुरक्षित नहीं मानते तभी उन्होंने कहा है.

"डायरी मेरे लिए दहकता हुआ जंगल हो, एक तटस्थ घोंसला नहीं जिसमें अपने पर घुसेड़ जब मैं चाहूँ चुपके पड़ा रहूँ, मेरे संघर्ष की प्रवक्ता हो यही मेरी सुरक्षा है- डायरी के कोरे पृष्ठों पर अंकित शब्दों में नहीं, उन पर जलती आग के बीच."(6)
मलयज (डायरी 3-127)

मलयज की डायरी का एक-एक शब्द उनकी सृजनात्मक शक्ति से जुड़ा है.उनका आंतरिक संघर्ष ही उन्हें उत्कृष्ट लेखन की ओर अग्रसर करता है.मलयज की डायरी के हर पन्ने में वो उन्मुक्त नज़र आते हैं. यह एक अद्भुत और अति सम्वेदनशील कवि की डायरी है जिसमे उनका एक-एक पल, सुख-दुःख हर्ष- विषाद अंकित है. मलयज एक ऐसे रचनाकार थे जो जैसा सोचते थे वैसा ही लिखते थे उन्हें यश कीर्ति की कामना नहीं थी वो अपनी दुनिया में ही प्रसन्न रहते थे. लेखन उनका प्रथम प्रेम था. 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' इसका जीता जागता उदाहरण है. नामवर सिंह के सम्पादन में डायरी तीन खंडों में प्रकाशित है जो डायरी साहित्य में ही नहीं वरन सम्पूर्ण हिंदी साहित्य की प्रमुख धरोहर है.अशोक वाजपेयी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'कभी कभार' में मलयज की डायरी के सन्दर्भ में कहा है.

"32 वर्षों के दौरान लिखी गई मलयज की डायरी रचना और आलोचना आत्मीय स्मृति और अन्तरंग चिन्तन का, अपने आसपास समय और समाज में, हिंदी संसार में और स्वयं मलयज की दुनिया में जो घट रहा था उसका बेचैन, कभी-कभी निस्संग और निर्मम,अक्सर चिन्तायुक्त और उद्वेलित, धीरज और समझ का, सहानुभूति और कुशाग्रता का भावप्रवण, विचारोतेजक और कई तरह की चुनोतियाँ देने वाला लेखा-जोखा है. हिंदी में शायद ही इतनी लम्बी डायरी किसी लेखक ने लिखी हो. इसमें संदेह नहीं कि डायरी स्वयं मलयज को समझने के अलावा हिंदी साहित्य और समाज को गहराई से जानने-समझने में, विशेषत: पांचवे से सातवें दशक की अवधि के सिलसिले में, एक अनिवार्य संदर्भ ग्रन्थ है."(7)

मलयज ने 16 वर्ष की उम्र से डायरी लिखना आरम्भ किया था जिसे उन्होंने लगभग 32 सालों तक लिखा. उन्होंने रोज़-रोज़ नहीं लिखा .जब भी उनका मन किया जैसा भी अनुभूत किया वैसा ही अपनी डायरी में लिखा. डायरी उनके अंतर्मन का साक्ष्य है. वास्तव में डायरी में उनकी समग्र विधा का अंकन है. उनकी डायरी में अनेक स्थान पर प्रकृति के सुंदर व दुर्लभ दृश्य है जिसे उन्होंने एक चित्रकार की भांति महसूस किया है. अल्मोड़ा, रानीखेत और कौसानी के साथ-साथ डायरी में गडवाल-कुमाऊ आदि के भी रमणीय चित्र हैं.जैसे
"..और मंडुवा के उस खेत के पास खड़ी वह कुमाउनी युवती है. इनकी कमर में खुंसी हुई दरांती और सिर पर रखा हुआ खूब-खूब बड़ा गोल टोकरा. ऐसा लग रहा है, जैसे उसने कोपी गुफ़ा ओड़ ली हो."(8)
(3 अगस्त 1957)
डायरी में प्रकृति और स्त्री के ऐसे ऐसे दृश्यों को देखकर लगता है कि मलयज चित्रकार भी थे.पेशेवर न सही पर शोकिया तौर पर तो थे. मलयज की डायरी उनके आत्म निर्माण का प्रमाणिक दस्तावेज है जिसमें उनके अंतर की

गहरी छाप है. वो एक इमानदार लेखक रहें हैं तभी डायरी में किसी भी स्थान पर कृत्रिमता नहीं दिखाई देती है.उनका सम्वेदनशील व्यक्तित्व की झलक पग-पग पर दिखाई देती है. उन्होंने यथार्थ को जिया है.उनका चिन्तन स्पष्ट और प्रेरणादायक है जिसपर यथार्थ की स्पष्ट छाप है.डायरी लिखना मलयज के लिए जीवन जीने के कर्म जैसा ही था तभी तो डायरी के पन्नों में गहरी उथल-पुथल दिखाई देती है.संक्षेप में मलयज ने अपने जीवन के संघर्षों एवं दुखों की ओर इशारा करते हुए मानव जीवन में पाई जाने वाली सहज समस्याओं का चित्रं बड़ी कुशलता से किया है. एक व्यक्ति को कितना खुला,इमानदार और विचारशील होना चाहिए- इस भाव का सहज चित्रण मलयज ने अपनी डायरी में प्रस्तुत किया है. व्यक्ति का क्या दायित्व है और अपने दायित्वों के प्रति कैसा प्रभाव, कैसी सान्निध्यता होनी चाहिए,इसका स्पष्ट अंकन डायरी में हुआ है.

मलयज की डायरी से यह विदित होता है कि कविता उनके लिए बिम्ब है जबकि गद्य एक चित्र. इसी तरह वो विजय देव नारायण सही के शिष्य थे जिनका स्पष्ट प्रभाव उनके लेखन में यत्र-तत्र दिखाई देता है.मलयज की डायरी की अनेकों कवितायेँ और स्केचेज भी इस बात की पुष्टि करते हैं. शमशेर को वो प्रिय कवि और अपना आत्मीय मानते हैं. दिनमान ने अपने एक अंक में मलयज के लिए ठीक ही लिखा है. **करोड़ों लोग हैं, केवल शब्द के साथ होने से तुम इनसे अलग थे.(9)**

रमेश चन्द्र शाह के साथ पत्र व्यवहार में मलयज शमशेर के सम्बन्ध में कहते हैं की 'शमशेर जटिलता से नहीं जूझते, एक सुरक्षित कोना ढूंढते हैं'इसी तरह साही की आलोचना को रचना की सघन और तनावपूर्ण शर्तों पर पाने वाली प्रवृति मलयज को आकर्षित करती थी.सही का मलयज का ऐसा प्रभाव था सिर्फ ऐसा नहीं जैसा गुरु शिष्य का होता है बल्कि साही के व्यक्तित्व, उनकी विचारधारा,उनकी दृष्टि,तर्कों को बहस का आधार बनाने वाली प्रवृति सभी से मलयज प्रभावित थे.मलयज के लेखन में इन प्रवृतियों की झलक आसानी से दिख जाति है. हँसते हुए मेरा अकेलापन में मलयज का अकेलापन सर्वत्र दिखाई देता है. उनकी गहरी और पैनी दृष्टि जहाँ भी पड़ी वो चीज़ मानो जीवंत हो गयी है. वो प्रकृति के चितेरे कवि रहे हैं. मानवीय संवेदना और दूसरों से उनके आत्मीय सम्बन्धों को डायरी के माध्यम से जाना जा सकता है. वो अपने अंतिम दिनों तक डायरी लिखते रहे इससे यह भी ज्ञात होता है की डायरी लेखन के प्रति वो कितने सजग और प्रेरित रहे होंगे.

निष्कर्ष :

मलयज की डायरी को हिंदी साहित्य की अप्रतिम डायरी के रूप में देखा जा सकता है. इस डायरी में उनके गीत कविता, विचार और रोजमर्रा की बाते हैं. इस डायरी में कहीं कहीं उनकी आलोचना दृष्टि भी दिखाई देती है. मलयज ने इस डायरी को बहुत आत्मीयता के साथ लिखा है. इस डायरी में उनके तीस वर्षों की लम्बी साहित्यिक यात्रा है. तीन खंडो में प्रकाशित नामवर सिंह द्वारा सम्पादित इस डायरी का प्रकाशन वाणी प्रकाशन द्वारा किया गया है.

संदर्भ ग्रन्थ

1. सं नामवर सिंह-खंड-मलयज की डायरी ,1 ,2000दिल्ली, वाणी प्रकाशन ,
2. सं नामवर सिंह-खंड-मलयज की डायरी ,2 ,2000दिल्ली, वाणी प्रकाशन ,
3. सं नामवर सिंह-खंड-मलयज की डायरी ,3 ,2000 वाणी ,प्रकाशन दिल्ली,
4. अग्निहोत्री बर्जेंद्र ,हिंदी साहित्य का निकष ,2020उत्तर प्रदेश,मधुराक्षर प्रकाशन ,
5. स ,डायरी अंतर्जीवन के साक्ष्य ,जोशी हिमांशु .2006 किताबघर प्रकाशन दिल्ली,

6. मिश्रा दयानिधि,हिंदी का कथेतर गद्य ,2020 वाणी प्रकाशनदिल्ल्ली ,
7. कमल अरुण 2009 गोलमेज,,वाणी प्रकाशनदिल्ली ,
8. वाजपयी अशोक,कभी कभार,2000दिल्ली ,वाणी प्रकाशन,
9. दिनमान18 अंक --इशू-4 पृष्ठ-38
10. सं त्रिपाठी आशीष ,किताबनामा ,2021दिल्ली ,राजकमल प्रकाशन,
11. सं तरुण ,रचना से संवाद ,2022 राजकमल प्रकाशनदिल्ली ,
12. https://yourstory.com/hindi/77852ee9ff-poetry-is-recorded-in